प्रेस विज्ञप्ति

पूसा कृषि विज्ञान मेला – 2023

भा.कृ.अनु.प.-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली

- भा. कृ. अनु. प.- भा. कृ. अनु. स्.- नई दिल्ली द्वारा पूसा कृषि विज्ञान मेला 2023 का आयोजन, 2-4 मार्च, 2023 के दौरान किया जाएगा। मेले की रखी गयी थीम "श्री अन्नों द्वारा पोषण, खाद्य एवं पर्यावरण सुरक्षा" अति उपयुक्त है, क्योंकि संयुक्त राष्ट्र महासभा ने वर्ष 2023 को श्री अन्न अंतर्राष्ट्रीय वर्ष घोषित किया गया है, जिसके लिए भारत श्री अन्न को वैश्विक भोजन बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत है। श्री अन्न प्राचीन काल से भारतीय कृषि, खाद्य प्रणाली, संस्कृति और सभ्यता का एक अभिन्न अंग रहा है। श्री अन्न में पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने और खाद्य प्रणालियों को जलवायु अनुकूल बनाने की अपार क्षमता है।
- इससे पहले वर्ष 2018 में, भारत ने श्री अन्न राष्ट्रीय वर्ष मनाया था जिसमे सरकार ने श्री अन्न को वैश्विक रसोई में लोकप्रिय बनाने पर जोर दिया था।
- माननीय केंद्रीय कृषि और किसान कल्याण मंत्री, श्री नरेंद्र सिंह तोमर जी उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि होंगे। श्री कैलाश चौधरी जी और सुश्री शोभा करंदलाजे जी, माननीय कृषि और किसान कल्याण राज्य मंत्री कार्यक्रम के दौरान सम्मानित अतिथि के रूप में उपस्तिथ होंगे।
- डॉ. हिमांशु पाठक, सचिव डेयर और महानिदेशक, भा. कृ. अनु. प. उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करेंगे। इस अवसर पर परिषद और संस्थान के अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी की कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएंगे।

क. इस वर्ष मेले के मुख्य आकर्षण निम्नलिखित हैं

- कृषि में महत्वपूर्ण और समसामयिक मुद्दों पर तकनीकी सत्र,
  इसमें अनुसंधान संस्थानों के साथ-साथ निजी संगठनों के आसन्न वक्ता शामिल होंगे
- अंतर्राष्ट्रीय श्री अन्न वर्ष – 2023 के अंतर्गत श्री अन्न आधारित मूल्य श्रृंखला का विकास
- स्मार्ट खेती/ संरक्षित खेती मॉडल
- जलवायु अनुकूल एवं संपोषक कृषि
- कृषि विपणन एवं निर्यात
- किसानों के नवाचार – संभावनाएं एवं समस्याएं
- किसान उत्पादक संगठन (एफ.पी.ओ.) – स्टार्टअप लिंकेज

ख. प्रमुख तकनीकों की विषयगत प्रदर्शनियाँ

- शोध संस्थानों, स्टार्ट-अप्स और उद्यमियों के स्टॉल
- श्री अन्न आधारित स्टॉल लोगों जिससे लोगों को विभिन्न प्रकार के श्री अन्न उनकी खेती पद्धतियों, मूल्यवर्धन और पोषण संबंधी महत्व के बारे में शिक्षित किया जा सके
- भारतीय कदन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद के साथ-साथ वी.पी.के.ए.एस, अल्मोड़ा; काजरी, जोधपुर और एस.के.एन कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर; जो श्री अन्न सम्बंधित अनुसंधान से जुड़े हैं वे भी मेले में भाग लेंगे।
- कृषि-स्टार्टअप और विशेष रूप से श्री अन्न -आधारित स्टार्ट-अप अपने स्टॉल लगाए जायेंगे। यह युवाओं को आजीविका के स्रोत के रूप में स्टार्टअप शुरू करने के लिए प्रेरित करेगा।

ग. गेहूं, सरसों, चना, सब्जियों, फूलों और फलों की महत्वपूर्ण किस्मों का जीवंत प्रदर्शन

घ. दूरस्थ किसानों और उपभोक्ताओं के लाभ के लिए मेले का लाइव वेबकास्ट

ङ. संस्थान द्वारा विकसित धान की किस्मों के बीजों की बिक्री। इसके लिए खरीदे गए बीजों को मेला ग्राउंड से संस्थान के गेट तक नि:शुल्क ले जाने में किसानों की मदद के लिए विशेष व्यवस्था की गई है।

च. किसान उद्यमियों, इनपुट एजेंसियों के स्टॉल ।

छ. किसान परामर्श स्टॉल किसानों जो मौके पर किसानों की समस्या का निदान और समाधान में मदद करेगा।

ज. संस्थान ने किसानों को प्रोत्साहित करने हेतु संस्थान ने किसानों को पुरस्कृत करने के लिए चयनित किया गया है जिसमें IARI-नवोन्मेषी किसान (36); IARI -अध्येता किसान (5); आजीवन उपलब्धि पुरस्कार (1) शामिल है।

झ. नवोन्मेषी किसान सम्मेलन किसानों के बीच आपस में जानकारी आदान प्रदान करने की सुविधा प्रदान करेगा।

ञ. मेले में निम्नलिखित किस्मों और प्रौद्योगिकियों को प्रदर्शित किया जाएगा:

- गेहूं में, पत्ती, तना और स्ट्राइप रस्ट के लिए प्रतिरोधी एचडी 3406 और एचडी 3407
- सिंचित स्थितियों के लिए गेहू एचडी 3411
- गेहूं की एचडी 3369, एचआई 1650 (पूसा ओजस्वी), एचआई 1653 (पूसा जाग्रति), एचआई 1654 (पूसा अदिति), एचआई 1655 (पूसा हर्ष), एचआई 8826 (पूसा पोष्टिक) और एचआई 8830 (पूसा कीर्ति)
- धान की शाकनाशी (इमेज़ेथापायर) सहिष्णु किस्मों, पूसा बासमती 1979 और पूसा बासमती 1985
- चने की शुष्क क्षेत्रों के लिए पूसा जेजी-16, सूखा सहिष्णु किस्म
- पूसा सरसों-34 - कम इरूसिक अम्ल वाली(0.79%) एवं उच्च उपज वाली किस्म
- चार बायोफोर्टिफाइड बाजरे की किस्में, पीपीएमआई 1280, पीपीएमआई 1281, पीपीएमआई 1283 और पीपीएमआई 1284 (उच्च लौह और जस्ता सांद्रता के साथ)
- बागवानी फसलों में गुलाब की दो किस्में (पूसा लक्ष्मी और पूसा भार्गव); गेंदा (पूसा पर्व और पूसा उत्सव); ग्लैडियोलस (पूसा रजत); गुलदाउदी (पूसा लोहित) और बोगेनविलिया (पूसा आकांक्षा)
- नरम बीज वाली अमरूद की दो किस्में लाल गूदे के लिए, 'पूसा आरुषि' और सफेद गूदे के लिए पूसा प्रतीक्षा
- पपीते की 'पूसा पीत' किस्म जो गाइनोडाओसियस और अर्ध-बौनी है ।
- मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के लिए उच्च उपज वाली सब्जियों की किस्मों जैसी बैंगन की पूसा कृष्णा को 42.5 टन/हेक्टेयर की उपज क्षमता के साथ जारी किया गया जिसके फल मध्यम हैं और भरवां बैंगन बनाने के लिए उपयुक्त हैं। गाजर की पूसा प्रतीक राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, दिल्ली, कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल और पुडुचेरी के लिए 33.5 टन/हेक्टेयर की औसत उपज क्षमता के साथ जारी की गयी , जो अगेती खुदाई के लिए उपयुक्त है, जिसकी जड़ें समान और मध्यम आकार की होती हैं। टमाटर संकर, टीओएलसीवी-6 जिसकी उपज क्षमता 70 टन/हेक्टेयर है और जो नई दिल्ली लीफ कर्ल वायरस के लिए प्रतिरोधी है को भी जारी किया गया है। सब्जियों की इन किस्मों/संकरों की पहचान अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना द्वारा की गई है। इस के साथ ही लाल गोभी की पूसा लाल गोभी संकर-1, फूलगोभी की पूसा स्नोबॉल संकर-2 और शिमला मिर्च की पूसा शिमला मिर्च-1 को भी उच्च उपज क्षमता के लिए जारी किया गया।
- एकीकृत कृषि प्रणाली मॉडल जिसमें (फसल + डेयरी + मत्स्य + कुक्कुट पालन+ बत्तख पालन + मधुमक्खी पालन + सीमा वृक्षारोपण + बायोगैस इकाई + वर्मी-कम्पोस्ट) शामिल हैं, द्वारा पारंपरिक धान-गेहूं प्रणाली की तुलना में उच्चतम उत्पादकता, तथा आय प्राप्त की गई। एकीकृत कृषि प्रणाली मॉडल से रोजगार में वृद्धि के साथ-साथ प्रति वर्ष 4.2 लाख रुपये प्रति हेक्टेयर का शुद्ध लाभ प्राप्त होता है।

- पूसा डीकंपोजर, सूक्ष्मजीवी तकनीक धान के पुआल/ठूंठों के प्रबंधन के लिए एक पर्यावरण अनुकूल समाधान है, जिसका लाइसेंस 24 निजी फर्मों को दिया गया है।
- भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान की प्रौद्योगिकियों का प्रसार अपने आउटरीच विस्तार कार्यक्रम के तहत देश के विभिन्न स्थानों पर किया जाता है। इसके लिए राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में एकीकृत ग्राम विकास कार्यक्रम, राष्ट्रीय विस्तार कार्यक्रम के अंतर्गत भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के चयनित संस्थानों/राज्य कृषि विश्वविद्यालयों और स्वैच्छिक संगठनों के साथ विभिन्न स्तरों पर काम किया जाता है। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान की सभी प्रदर्शित किस्मों में सभी स्थानों पर स्थानीय किस्मों की तुलना में काफी अधिक उपज प्राप्त हुई ।
- रोगजनकों को ऑन-साइट पहचानने के लिए लीफ कर्ल वायरस और बकाने रोगज़नक का पता लगाने हेतु डायग्नोस्टिक किट का विकास किया गया है।

ट. भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा यू-ट्यूब पर शुरू किए गए कार्यक्रम 'पूसा समाचार' के द्वारा किसानों और अन्य हितधारकों को नवीनतम तकनीकों और विभिन्न फसलों के लिए मौसम-वार परामर्श वीडियो-आधारित सामग्री के रूप में उपलब्ध कराया जाता है। पूसा समाचार को हिंदी, तेलुगु, कन्नड़, तमिल, बांग्ला और उड़िया भाषा में यू-ट्यूब चैनल के साथ-साथ व्हाट्सऐप ग्रुप के माध्यम से किसानों के बीच प्रसारित किया जाता है । प्रत्येक एपिसोड में विशिष्ट फसल संबंधित परामर्श, किसानों की सफलता की कहानी, पूसा व्हाट्सऐप सलाह और मौसम संबंधी जानकारी का प्रसारण किया जाता है। साथ ही संस्थान द्वारा एक समर्पित पूसा व्हाट्सऐप नंबर (9560297502) भी लॉन्च किया गया है, जिसमें वैज्ञानिकों द्वारा किसानों के कृषि संबंधित प्रश्नों का तत्परता से जवाब दिया जाता है। इस समय भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान यू-ट्यूब चैनल के 31,000 सबस्क्राइबर हैं जिनकी कुल दर्शक संख्या 9 लाख से अधिक है।

ठ. भारतीय कृषि की चुनौतियों का समाधान करने के लिए विश्व स्तर की प्रौद्योगिकियां और शिक्षा प्रदान करने के लिए कृषि अनुसंधान, शिक्षा और प्रसार में विज्ञान आधारित नवाचार, संस्थान का प्राथमिक आदर्श वाक्य है। मनुष्य, भूमि और पर्यावरण के लिए गैरनुकसानदेह, पर्यावरण के अनुकूल और सतत कृषि को बढ़ावा देने के लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकियों के विकास के माध्यम से किसानों की आय बढ़ाने के लिए संस्थान प्रतिबद्ध है।